

7652. नानासह^० LA. (II) 47, 5. सर्वभूत^० R. 3, 23, 37. सर्वलोक^० 6, 91, 1. अतिभयंकरम् adv. MBh. 1, 1164. — 2) m. a) eine kleine Eulenart (डु-एडुल) RĀG. im ÇKDr. — b) N. pr. eines der Viçve Devāḥ MBh. 13, 4356. verschiedener Personen DRAUP. 2, 11. KATHĀS. 43, 382. 47, 16. LALIT. ed. Calc. 391, 8. — 3) f. ई N. pr. einer der Mütter im Gefolge des Skanda MBh. 9, 2622.

भयंकरत् (भय + क^०) nom. ag. = भयंकर MBh. 7, 1325.

भयजात (भय + जात) m. N. pr. eines Mannes; s. भायजात्य und vgl. अभयजात.

भयडिण्डिम (भय + डि^०) m. Schlachttrommel ÇKDr. nach den Purāṇa.

भयत्रातर (भय + त्रा^०) nom. ag. Erretter aus einer Gefahr Spr. 4037.

भयद् (भय + 1. द्) 1) adj. Schrecken bringend, gefahrbringend: शत्रूणां HARIV. 4319. भूत^० Bhāg. P. 3, 14, 42. VARĀH. BRH. S. 3, 31. वज्रि^० Feuersgefahr bringend 4, 5. — 2) m. N. pr. eines Fürsten VP. 447.

भयदायिन् (भय + दा^०) adj. = भयद्. सलिल^० Wassersgefahr bringend VARĀH. BRH. S. 3, 35.

भयदुत (भय + दुत) adj. vor Angst fliehend AK. 3, 1, 42. H. 366. HALĀJ. 2, 324.

भयनाशिन् (भय + ना^०) 1) adj. Furcht —, Gefahr verscheuend. — 2) f. ई eine best. Pflanze RĀG. im ÇKDr.

भयप्रद् (भय + प्रद्) adj. = भयद्. सपत्नानाम् MBh. 4, 1341. अति^० AK. 2, 8, 2, 68.

भयप्रदायिन् (भय + प्र^०) adj. dass.: लुक्स्त्रतस्क्रामय^० Hungersgefahr u. s. w. bringend VARĀH. BRH. S. 7, 7.

भयब्राह्मण (भय + ब्रा^०) m. ein furchtsamer Brahmane P. 6, 2, 69, Sch.

भयधृष्ट (भय + धृष्ट) adj. vor Angst fliehend ĠATĀDH. im ÇKDr.

भयमान (von भी) m. N. pr. eines Mannes (nach ŚĀJ.) RV. 1, 100, 17. Liedverfasser von 1, 100 ANUKR.

भयव्यूह (भय + व्यूह) m. Bez. einer best. Aufstellung der Truppen bei allseitiger Gefahr Kām. NITIS. 18, 49.

भयस्थ (भय + स्थ) gefahrvolle Lage: अस्मिन्भयस्थे कृपातुम् लोकम् RV. 2, 30, 6.

भयस्थान (भय + स्थान) n. Gelegenheit —, Veranlassung zur Furcht Spr. 3022.

भयहारक (भय + हार^०) adj. Furcht —, Gefahr benehmend PAÑKAR. 4, 4, 13.

भयानक (von भी) UṆĀDIS. 3, 82. 1) adj. f. श्री schrecklich, Grausen erregend gaṇa भीमादि zu P. 3, 4, 74. H. 302. an. 4, 25. MED. k. 203. HALĀJ. 4, 20. BHAG. 11, 27. HIP. 3. 2. MBh. 1, 6305. 3, 391. 6, 2234. 18, 85 (f.). HARIV. 8908. 16024. R. 1, 32, 11. PAÑKAR. 4, 3, 68. 2, 2, 47. Bhāg. P. 7, 8. 20. 9, 15 (अति^०). रस in poetischen Compositionen AK. 1, 1, 2, 17. 20. H. 294. H. an. MED. HALĀJ. 1, 92. R. 1, 4, 7 (3, 46 GORR.). ŚĀH. D. 24, 18. 76, 16. VERZ. d. B. H. No. 539. ईष्टप्रेणै समाख्यता रसौ वीरभयानकौ PRATĀPAR. 10, a, 9. 48, a, 8. VERZ. d. Oxf. H. 123, a, 14. — 2) m. a) Tiger — b) Rāhu H. an. MED.

भयावह (भय + अवह) 1) adj. Furcht —, Gefahren abwehrend. — 2) König, Fürst TRIK. 2, 8, 1.

भयावह (भय + आ^०) adj. Furcht —, Gefahr bringend H. 303. HALĀJ. 4, 20. ÇVETĀÇV. UP. 2, 8. ŚĀV. 5, 8. Spr. 3080. 5390. R. 1, 14, 44. 4, 9, 18.

RĀG-TAR. 3, 344. VET. in LA. (II) 4, 12. VRDDHA-KĀṆ. 3, 19. सर्वभूत^० M. 8, 347. जगद्वयभयावह Bhāg. P. 1, 11, 3.

भयुज् (1. भ + युज्) adj. mit einem Nakshatra verbunden, in einem N. stehend WEBER, GJOT. 106.

भय्य (von भी) n. ved. gerund. timendum P. 6, 1, 83. भय्यं किलासीत् Sch. नागृक्ताया भय्यम् PAÑKAR. Br. 10, 3, 16. प्रतिनोदात् भय्यम् 23, 6, 6.

1. भर्, भर्ति, भर्ते DĀTUP. 22, 1. भर्ति RV. 1, 173, 6. gew. विभर्ति und विभर्ति, विभृते DĀTUP. 23, 5. P. 7, 4, 76. 6, 1, 192. विभर्मसि, विभर्ति und विं, विभृहि, विभृयात्, अविभर् (P. 6, 1, 68, Sch.), अविभृत् (Bhāg. P. 9, 10, 43), विभर्त्, अविभर्त् (P. 7, 3, 83, Sch.), विभृत्, विभृमाण; जभर्, जभर्, जभृस्, जभे, जभिर्, जभर्त्, जभर्त्न P. 8, 2, 32, VĀRTT.; in der späteren Sprache बभार (P. 3, 1, 39), बभृव (P. 7, 2, 13), बभे, बभार्ण (RV. 3, 1, 8), विभर्त् चकार (P. 3, 1, 39), विभर्त् बभूव, विभरामास; (आ) अभाषम्, अभाषिष्, अभाषति, (उद्) भर्षत्, अभाष, अभाष, अभाषाम्; भरिष्यति; (आ) धियात्; inf. ved. भर्तवे, अर्भर्तवै; pass. धियते, (प्र) भारि, भृत् partic. 1) tragen; innehaben, enthalten, besitzen: भारम् RV. 7, 34, 7. आयुधानि 4, 16, 14. वारं: 7, 77, 2. दायिम् 1, 23, 13. दायिणम् 7, 33, 14. हस्तंया: 1, 33, 3. कलशम् AV. 9, 4, 6. त्वं पृथिवि बिभर्षि द्विपद: 12, 1, 15. श्रौषधीया बिभर्ति पृथिवी 2. शैलं बिभृम: VĀSAVAD. 2, 3. कूर्मा बिभर्ति धरणीं खलु पृथकेन Spr. 77. मृद् मूर्ध्ना बिभर्ति य: MBh. 13, 1813. प्रायश: प्राकृताश्चापि स्त्रियं रक्षसि विभर्ति । अयं महाव्रतधरो बिभर्ति सदसि स्त्रियम् || so v. a. auf dem Schoosse halten Bhāg. P. 6, 17, 8. VID. 116. धुरं धरिष्या बिभर्त् बभूव RAGH. 18, 44. अण्डानि विधति स्वानि न भिन्दति पिपीलिका: MBh. 1, 3042. खड्गं विधत् 5, 6099. VID. 210. Bhāg. P. 9, 10, 43. BHATT. 17, 16. श्वेतं कमाण्डलं विधत् MBh. 1, 1149. R. GORR. 1, 46, 30. गर्भम् eine Leibesfrucht tragen RV. 3, 46, 5. 4, 18, 4. 6, 67, 4. 7, 4, 5. VS. 8, 26. मातेवायिं स्वे येनावाभारुखा 12, 61. अश्विना RV. 10, 17, 2. उदरे AV. 11, 3, 3. पितृश्च गर्भं जनिषुश्च बभे RV. 3, 1, 10. अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इव सुभृतो गर्भिणीभि: KATHOP. 4, 8. अतो भक्षिष्ये समयेन साधौ यावत्तेजो बिभृयादात्मनो मे Bhāg. P. 3, 22, 19. 9, 9, 39. समान आ भरणे बिभ्रमाणा: (pass.) RV. 10, 31, 6. द्रोणो वा अन्नं धियते TS. 5, 4, 11, 2. यावद्विपेत ऋतं तावत्स्वत्वं हि देहिनाम् so viel der Bauch enthält Bhāg. P. 7, 14, 8. कर्षवाध्याम्बु बिभ्रता । चतुषा KATHĀS. 39, 198. अग्निमपौ बिभ्रत्यग्निर्गमम् AV. 12, 1, 19. श्रामन्यवात्मानं बिभर्ति AIT. UP. 4, 1. MAITREJUP. 6, 1. नवान्याभरणानि बिभ्रत् tragend ARĠ. 1, 3. वलयम् ÇĀK. 133. मालाम् R. 3, 32, 26. कार्पासिकवस्त्रयुगम् VARĀH. BRH. S. 48, 72. मुक्ताफलं त्यज्य बिभर्ति गुञ्जाम् Spr. 4349. RAGH. 8, 1. कौस्तुभाख्यमयो सारं बिभ्राणं वृक्षोरसा 10, 10. बिभ्राणा कृदये — प्रेमाभिधानं नवं शल्यम् Spr. 1971. बिभ्रज्जटामण्डलम् ÇĀK. 170. जटाय बिभ्रान्नित्यं श्मश्रुलोमनखानि च unbeschnitten tragen M. 6, 6. बिभर्ति परमं वपु: MBh. 3, 2583. ÇĀK. 37. MĀRK. P. 104, 18. बिभ्रती रूपमुत्तमम् MBh. 3, 15579. HIP. 3, 15. रक्तचन्दनद्वयितम् । वनो बिभ्रत् HARIV. 12307. वलित्रयं चारु बभार KUMĀRAS. 1, 39. श्वेतरोमाङ्कम् RAGH. 1, 83. बिभ्राणा वर्णरूपाणि विविधानि HARIV. 9737. रेखाम् H. 1310. यं गन्धं बिभ्रत्योषधय: AV. 12, 1, 23. HARIV. 7088. घोडः RV. 1, 39, 10. तत्रम् 5, 64, 6. ÇAT. Br. 3, 8, 2, 1. 9, 5, 1, 62. 7, 1, 2, 42. fg. ब्राह्मीं वाचं बिभर्षि MBh. 1, 3371. ब्राह्मीं श्रियम् 2, 2654. परमां शक्तिं ब्रह्मणा धारणात्मिकाम् SūRAS. 12, 32. वेगं पवनादतीव (सिंहः) Spr. 2047. मुखम् — इन्द्रेन्द्रियम् — बिभर्ति MEGH. 82. नाम R. 5, 3, 2. 7, 87, 4. Spr. 2303. यम: कुवेर: — भ-